RESEARCH PAPER

RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
e-ISSN: 2349-7637 | Vol.09 | Iss.01 | January 2022 | pp. 32-35
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Women's Liberty Consciousness in the Stories of Mehrunissa Parvez
मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में स्त्री स्वातंत्र्य चेतना

*[1]Nageena Mehra and [2]Dr. Anup Singh

[1]Research Scholar (PhD Hindi), Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan
[2]Associate Professor, Government PG College, Thanagazi, Alwar, Rajasthan

Abstract

The life of every living being in the world is full of diversities in which man is entitled to live the best life of all. He is also different and superior to others because of his consciousness of sensation. The nature of man became his nature, which in time got fame by becoming an identity. Freedom emerged not only as a human nature but as a right, which today has become the cause of struggle and synonymous with necessity. There have been many struggles for independence since ancient times. It would not be wrong to call the twenty-first century the century of discussions. In which many discussions are present in front of us like Dalit discourse, women discourse, tribal discourse, minority discourse etc. With the passage of time, the echoes of women's discourse also started to be heard. Even though India is included in the category of prosperous developing country, but women are still seen cut off from the mainstream of the society. Even today the woman is situated on the margins of her own house. The creators have tried to bring these marginalized tribals at the center of their creations. In which he has expressed the exploitation done by the society in the name of superstition, the poverty and helplessness of the women society, their ironic life etc. The stories of writer Mehrunnisa Parvez have the material to prepare the background of women's rights and her freedom life.

Keywords: *Freedom consciousness, minorities, discourse, evils, tragedy.*

Abstract in Hindi

संसार में प्रत्येक प्राणी का जीवन विविधताओं से सराबोर होता है जिसमें मनुष्य सभी से उत्तम जीवन जीने का अधिकारी होता है। वह संवेदना की चेतना के कारण अलग भी है और अन्य से श्रेष्ठ भी है। मानव का स्वभाव ही उसकी प्रकृति बनी जो कालान्तर में पहचान बनकर प्रसिद्धी पायी। स्वतंत्रता मानव का स्वभाव ही नहीं अपितु अधिकार बनकर उभरा जो आज संघर्ष का कारण और आवश्यकता का पर्याय बन गया है। प्राचीन समय से ही स्वतंत्रता के लिए अनेक संघर्ष होते रहे हैं। इक्कीसवीं सदी को विमर्शों की सदी कहे तो गलत न होगा। जिसमें अनेक विमर्श हमारे समक्ष मौजूद है जैसे दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श इत्यादि। समय के साथ–साथ स्त्री विमर्श की गूँज भी सुनाई देने लगी। भारत भले ही समृद्ध विकासशील देश की श्रेणी में शामिल है, लेकिन स्त्री अब भी समाज की मुख्यधारा से कटे नजर आती हैं। आज भी स्त्री अपने ही घर में हाशिये पर स्थित है। रचनाकारों ने इन्हीं हाशिये पर स्थित आदिवासियों को अपनी रचनाओं के केंद्र में लाने का प्रयास किया है। जिसमें उन्होंने अन्धविश्वास के नाम पर समाज द्वारा किया गया उनका शोषण, स्त्री समाज की गरीबी–लाचारी, उनके विडम्बनापूर्ण जीवन आदि को अभिव्यक्त किया है। लेखिका मेहरून्निसा परवेज की कहानियाँ स्त्री अधिकार और उसके स्वातंत्र्य जीवन की पृष्ठभूमि तैयार करने की सामग्री रखती है।

Keywords: *स्वातंत्र्य चेतना, अल्पसंख्यक, विमर्श, कुरीतियाँ, त्रासदी।*

Article Publication

Published Online: 12-Jan-2022

***Author's Correspondence**

Nageena Mehra

Research Scholar (PhD Hindi), Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan

nageenamehra86[at]gmail.com

10.53573/rhimrj.2022.v09i01.006

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

'सीढ़ियों का ठेका' नामक कहानी में दो बूढ़ी मुस्लिम विधवा, बेसहारा नारियों का चित्रण है। करीमन और फातिमा जकात खैरात पर बसर करनेवाली विधवा बूढ़ी मुस्लिम नारियाँ हैं। दोनों मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर भीख माँगती है। दोनों में भीख

माँगने की होड होती रहती है। दोनों की आपस में बनती नहीं है क्योंकि करीमन को लगता है कि भीख के पैसे मुझे नहीं मिल पाते। करीमन को इसलिए भीख माँगनी पड़ती है कि उसकी बहू उसे खाना नहीं देती और भीख माँगने के लिए मजबूर कर देती थी। करीमन अपना सुख और दुःख कुबड़ी फातिमा को ही बतलाया करती थी। करीमन को अपने पति से कभी सुख हासिल नहीं हुआ था। पहली रात में ही उसके पति ने करीमन को डरा दिया था– "देख, बीबी कुतिया की जात होती है, खायी और घर की रखवाली करती पड़ी रही ज्यादा चू–चपड़ की तो पूरी बत्तीसी झाड़ दुँगा।"[1]

इस प्रकार करीमन को पति द्वारा प्रताड़ित करके उसकी स्वतंत्रता का गला घोंठ दिया जाता है। लेखिका स्त्री पात्रों के माध्यम से महिला को खुद का जीवन जीने की आजादी देना चाहती है ताकि वह भी समाज निर्माण में अपना योगदान दे सके। इस कहानी में मेहरून्निसा जी ने मुस्लिम निम्न वर्ग का चित्रण किया है, जो और कोई साधन न होने के कारण खैरात और भीख पर अपना पालन पोषण करते हैं। करीमन, कुबड़ी फातिमा आदि खैर–खैरात के ही दम पर जीते हैं। इस कहानी पर समीक्षा करते हुए डॉ.कीर्ति केसर लिखती है– "मेहरून्निसा परवेज की कहानी 'सीढ़ियों का ठेका' में विधवा बे–सहारा स्त्रियों की आर्थिक परतंत्रता और परिवार में उनकी दुर्दशा का मार्मिक चित्रण मिलता है। करीमन बूढ़ी विधवा है। घर की छत का एक कोना उसे इसलिए मिला हुआ है कि वह मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर गर्मी की चिलचिलाती धूप में पाँच पैसे पा जाती है।"[2]

मेहरून्निसा की प्रसिद्ध कहानी 'शनाख्त' में शराबी और जुआरी पिता द्वारा बेटी और पत्नी के शोषण की कहानी है। बनी अपने माता पिता की संतान है लेकिन बनी अपनी माँ के साथ रहती है। बनी की माँ किसी भी तरह अपना गुजर–बसर करती है। इनका जीवन बड़ा ही अभावपूर्ण रहता है। बनी का बाप शराबी होने के कारण घर पर कभी कभार ही आता है और कुछ पैसे दे जाया करता है किन्तु जो पैसे वह देता है उसे वसूल भी करता है। अपनी बीवी की इज्जत के साथ खेलता रहता है और बनी किसी अंधेरे कोने में छुप जाया करती। वह अपने बाप के बारे में कहती है– "बाप शराब के नशे में बेशर्म हो उठता था और भूखे शेर की तरह माँ पर झपटता था, फिर वह घर–बाहर, अंधेरा, उजाला, लोक–लाज कुछ नहीं देखता था।"[3] इस प्रकार यह कहानी स्त्री स्वातंत्र्य की रक्षा करने में पूरी तरह नाकाम समाज का यथार्थ चित्रण किया गया है। पति की मृत्यु होने पर बनी की माँ उसे पहचानने से भी मना कर देती है, क्योंकि एक पत्नी और एक बेटी का अपमान किया था। लेखिका इस कहानी द्वारा स्त्री चेतना का स्वर प्रखर करती है तथा अन्य स्त्री की नई भूमि तैयार करती है। इस कहानी में नायिका अपने पति के शोषण से त्रस्त होकर अलग रहने लगती है। अपनी बेटी तथा खुद का पेट भरने के लिए उसे किन–किन उपेक्षित रास्तों से गुजरना पड़ता है, वही इस कहानी का प्रमुख विषय है। तंगी हाल में नायिका को जीवन गुजारा करने के लिए अपना जिस्म तक बेचना पड़ता है। वह कहती है– "बचपन से ही गरीबी के कई नंगे रूप देखे थे वे अपनी आँखों के सामने वासना का नंगा नाच देखा थास पैसे के लिए खुद माँ को बिकते देखा था।"[4] शराबी, व्यभिचारी व जुआरी पिता सिर्फ अपनी हवस पूर्ति के लिए ही घर आता है। इतना ही नहीं एक दिन वह शराब के नशे में अपनी बेटी तक को भी हवस का शिकार बनाने की कोशिश करता है। इस संदर्भ को लेकर लेखिका कहती है– "यही गरीबी थी शायद, जब भूखे पेट से होकर शराब आँखों में उतरती है तो पत्नी और बेटी में अंतर नहीं दिखता था।"[5]

ऐसी ही कथा 'देहरी की खातिर' कहानी में भी देखी जा सकती है। इसमें नायिका नानी आया भी अपना परिवार तथा गृहस्थी चलाने के लिए बड़े साहबों के घरों में काम करती है, कभी–कभी उनके बिस्तर तक पहुँच कर गर्भ कर लेती है। यहाँ तक कि गरीबी की मजबूरी में आकर वह अपने ही पदचिन्हों पर अपनी दोनों बेटियों को भी उस खड्डे में ढकेलती है।

ऐसा ही मेहरून्निसा परवेज ने 'बंजर दुपहर' कहानी में पति–पत्नी में ऊब और एकाकीपन को स्त्री स्वातंत्र्य से जोड़कर रेखांकित किया है। कहानी के दो पात्र राजेन्द्र और सपना दम्पती है। उनकी शादी को चार–पाँच साल ही हुए है। लेकिन फिर भी वे दोनों एक दूसरे से शारीरिक और मानिसक दृष्टि से अलग होते जा रहे है। यहाँ सपना को दोपहर का समय बड़ा उदास और ऊब भरा लगता है। यही समय होता है जब वह केवल सोचती रहती है। वह सोचती है कि शादी के चार–पाँच वर्ष के बाद दाम्पत्य के जीवन में एक खिझ और ठंड़ापन आ जाता है। आगे वह सोचती है कि उसका पति पहले कितना स्मार्ट था, जबकि वह अब बिलकुल फूहड़ सा हो गया है। वह स्वयं भी अपने आपको सजाने संवारने को भूल सी गई है। सपना अपना स्वातंत्र्य खो रही है और वह सोचती है– "शायद इसी वातावरण से बचने के लिए विदेशी अपना पार्टनर बदलते रहते है। वहाँ जीवन एक छलकता जाम है, मगर यहाँ जीवन एक ऊब और बर्फ से ज्यादा ठंडा है, कोई चेंज नहीं।"[6] इस प्रकार यह कहानी एक मजबूर और लाचार स्त्री को सोचने की ताकत देती है कि जब स्वातंत्र्य की भावना नष्ट होती है तो जीवन बेरंग और नीरस हो जाता है। आज समाज में अनेक उदाहरण देखे जा सकते है जिनमें स्त्री पशु समान एक खुंटे से बँधी रह गयी है।

'वीराने' कहानी में मेहरून्निसा परवेज दो नारियाँ जो माँ और बेटी है उनकी वीरान जिंदगी का वर्णन उनकी स्वातंत्र्य से जोड़कर करती है। यहाँ राजू और उसकी माँ दोनों ही त्रासदीपूर्ण जीवनयापन कर रही है, क्योंकि राजू के पिता का निधन हो चुका है। इसलिए राजू हमेशा अपनी माँ को संभालती रहती है। राजू अशोक नामक युवक से प्रेम करती है लेकिन एक

फुटबॉल मैच खेलते उसकी भी मृत्यु हो जाती है। राजू अपने आपको कुंवारी विधवा मानने लगी है। राजू की माँ राजू को कई बार विवाह के लिए कहती है लेकिन राजू इस बात के लिए तैयार नहीं होती। और फिर एक दिन राजू की माँ राजू की अलमारी ठीक कर रही थी कि अचानक उन्हें साड़ी में लिपटी एक डायरी मिलती है। राजू की माँ वह डायरी पढ़ती है। इस डायरी में राजू ने उसके अशोक के साथ संबंध कैसे घनिष्ट होते गये इसका सिलसिलेवार चित्रण किया था। अशोक की अचानक मृत्यु राजू को हमेशा–हमेशा के लिए जड़ बना जाती है। वह लिखती है– "आज तो डैडी भी नहीं रहे। डैडी के साथ मैं अशोक का चेहरा भी देख रही हूँ और मुझे लग रहा है कि मम्मी की तरह मैं भी विधवा हो गई हूँ।"[7] इस कहानी में लेखिका प्रश्न उठाती है कि क्या स्त्री जीवन पुरूष से बँधा है? जो वो कभी स्वतंत्र होकर सोच भी नहीं सकती।

लेखिका मेहरून्निसा ने एक अपनी सहेली के दाम्पत्य जीवन में तनाव निमार्ण कर अपना स्वार्थ निकालने के दृष्टिकोण का वर्णन करती है। उसे कहानी का नाम दिया है– 'खामोशी की आवाज'। जहाँ दाम्पत्य जीवन ने वह तीसरा हमेशा घातक रहा है। इसी तीसरे के वेश ने यहाँ अनु और रमेश के जीवन को कलह से भर दिया था। यहाँ अनु का चरित्र ज्यादा भावुक बनकर रह गया है। जब अनु के मृत्यु का समाचार लेखिका को मिलता है। यह समाचार मिलते ही लेखिका को अनु का पूरा विगत याद आने लगता है। वह सोचने लगती है कि क्या अनु आज मरी है? अनु ने तो अपने आप को मरा हुआ ही पाया था। उसकी मौत धीरे धीरे हुई थी। लेखिका अनु की अंतरंग सहेली रही थी। अनु का विवाह रमेश से हुआ था। कुछ दिनों बाद उसका दाम्पत्य जीवन कलह में बदल जाता है। लेखिका इसी तनाव के दौरान अनु के यहाँ आती–जाती है। उसका वहाँ जाना भी अच्छा रहा, क्योंकि दोनों को अपने मनोरंजन के लिए तीसरे व्यक्ति की आवश्यकता थी। दाम्पत्य जीवन में कुछ दिनों के बाद पति–पत्नी के बीच एक ऊब पैदा हो जाती है। इस ऊब को समझकर कुछ लोग इसे दूर करने की कोशिश करते है और सफल भी होते हैं। दूसरी तरफ कई लोग इस ऊब के शिकार होकर अपनी जिन्दगी तबाह कर लेते हैं। यह ऊब बेल की तरह फैलकर उनके जीवन का सारा रस खींच लेती है। इसी ऊब के शिकार रमेश और अनु थे। अनु का वर्णन करती हुई लेखिका कहती है– "अनु एक मुक्कमल औरत है। मैंने हमेशा महसूस किया कि एक साथ वह दो औरतें है यानी दो रुप है। दो औरतो का जीवन यह साथ साथ जी रही है। एक वह जो सामने से दिखती है, दूसरी वह जिसे कोई नहीं जानता केवल मैं जानती हूँ। उसके अन्दर उसे दूसरी औरत को हमेशा सताया है। तगं किया है। उसके अन्दर वाली औरत अनु पर हावी होती गयी और अनु की सारी इच्छाएँ, महत्वाकांक्षाएँ खत्म होती गई और वह बस एक ठूंठ की तरह रह गई।"[8] इस प्रकार हम देखते है कि लेखिका कहानियों के माध्यम से स्त्री स्वातंत्र्य की वकालत करती है और उनके सुनहरे सपनों की कल्पना भी करती है।

निष्कर्ष–

समकालीन कहानीकारों में जिन्होंने इन सब समस्याओं को केंद्र बनाकर कहानी लिखीं, उनमें मेहरून्निसा परवेज का विशिष्ट स्थान है। मेहरून्निसा परवेज की कहानियों का एक बड़ा भाग स्त्री समाज और उनकी संस्कृति को चित्रित करता है। उन्होंने शोषित जीवन को बहुत करीब से देखा ही नहीं बल्कि जिया भी है। इसलिए उनके साहित्य में स्त्री समाज मौजूद है। और उस समाज की चेतना को अपनी संवेदना के उच्च स्तर तक पहुँचाने का प्रयास किया है। स्त्री स्वतंत्रता का प्रश्न अनेक बार उठाया गया किन्तु आज भी उसके स्वातंत्र्य की रक्षा नहीं हो पायी है। लेखिका कहानियों के माध्यम से स्त्री अस्मिता और उसके स्वतंत्र जीवन निर्वाह की अभिव्यक्ति व्यक्त करती है। इस तरह अलग–अलग समस्याओं से अत्याचार की शिकार होती हुई नारी को 'नया घर', 'दूसरी अर्थी', 'त्यौहार' आदि कहानियों में भी दर्शाया गया है। लेखिका ने यहाँ रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याओं से जूझती नारी का यथार्थ चित्रण कर स्त्री प्रतिरोध को व्यक्त किया है। इसके अलावा त्रिकोणात्मक प्रेम संघर्ष में बिखरती नारी का चित्रण 'कानी बाट', 'फालगुनी', 'रेगिस्तान', 'कयामत आ गयी', 'जंगली हिरनी' आदि कहानियों में मिलता है। इस तरह मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में स्त्रियाँ अपने शोषण के खिलाफ प्रतिरोध तो करती है, पर हालात मजबूर कर देता है। इसलिए पुरातन जड़ संस्कृति, समाज में व्याप्त कुरीतियाँ आदि के प्रति प्रतिरोध करती हुई नारी ने उसे जड़ से उखाड़ फेंकने का साहस दिखाया है।

संदर्भ–

मेहरून्निसा परवेज : सीढ़ियों का ठेका, पृ.–19

कीर्ति केसर : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज–सापेक्ष अध्ययन पृ–160

मेहरून्निसा परवेज : शनाख्त, पृ.–28

मेहरून्निसा परवेज : शनाख्त, पृ.–32

मेहरून्निसा परवेज : शनाख्त, पृ.–32

मेहरून्निसा परवेज : बंजर दुपहर, पृ.–86

मेहरून्निसा परवेज : वीराने, पृ.–146

मेहरून्निसा परवेज : खामोशी की आवाज, पृ.– 35